करे नाचु, नटी, माया मोहे सभ खे,
छड्डे पीर फकीर खे, पापिणि पाड़, पटी,
संतनि विधसि समुझी, ग्रिचीअ में ग्रटी,
वेठा खेप खटी, सुञ वसंव जे विच में.

माया को नटी (नचनिया, नटिनी, नाटक करने वाली स्त्री) की उपमा देते हुए महाकवि सामी कहते हैं- माया नटनी ने नाटक/नृत्य/खेल करते हुए संसार के सभी मनुष्यों को मोह लिया है। पापिनी माया किसी को नहीं छोड़ती। यहां तक कि पीर, फकीर या साधु पुरुष का भी समूह नाश कर देती है। किन्तु सच्चे संतों ने उसे पहचान कर उसके गले में अड़गाड़ा बाँध दिया है, परिणाम स्वरूप माया संतों के अधीन हो गयी है। मानो संतों ने बड़ी विजय प्राप्त की और अब वे शून्य तथा आबादी के मध्य में स्थित है।

अद्वैत वेदांत में निर्गुण ब्रह्म को ही सारे जगत का आधार माना गया है। माया को कभी ब्रह्म की शक्ति कहा गया है तो कभी 'उपाधि', अर्थात् एक ऐसी वस्तु जो जितने स्थानों पर होती है, उन स्थानों की वस्तुओं का ज्ञान करा कर अलग हो जाती है। अद्वैत सिद्धांत में माया त्रिगुणात्मक, नामरूपमय और सारे विश्व की बीज-शक्ति मानी गयी है। माया से मिल जाने के कारण ब्रह्म/परमेश्वर बहुरंगी एवं सगुण रूप में भासमान होता है। इसी रूप में वह जगत् का कारण भी बनता है। माया त्रिगुणात्मक, भावरूप, अज्ञानमय और वर्णनातीत मानी गयी है। बाद वाले अद्वैत साहित्य में माया की दो शक्तियाँ बतायी गयी हैं- आवरण शक्ति और विक्षेप शक्ति। आवरण-शक्ति को कभी-कभी 'अविद्या' कहा जाता है और विक्षेप शक्ति को 'माया' । माया जगत का कारण होने से इसे 'प्रकृति' भी कहते हैं।

निर्गुणवादी एवं सगुणवादी संतों के काव्य में 'माया' का वर्णन मिलता है। संतों ने 'माया' शब्द का प्रयोग 'भ्रम' के लिए किया है। संत कबीर के लिए माया 'ब्रह्म की फँसरी' है। वह मोहिनी और 'महाठगिनी' है। इसके वश में होने के कारण जगत् भ्रम में पड़ गया है। माया ही मनुष्यों को भ्रष्ट बनाती है। यही जीवों को 'राम' से विलग कर देती है। तृष्णा स्वरूप माया ज्ञान द्वारा, अंतर्ज्ञान द्वारा, सद्गुरु की कृपा से नष्ट हो जाती है।

सामी साहब ने माया को नटी/नटनी की उपमा देकर उसके मोहक स्वरूप का वर्णन कर मनुष्य जाति के लिए विनाशकारी बताया है। माया के प्रभाव से मात्र ब्रह्मज्ञानी और अंतर्ज्ञानी ही बच पाते हैं।

■